शिक्षक - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 29-08-2020, वर्ग - M.A - II

फिशर के मुद्रा परिमाण सिद्धान्त

फिशर के मुद्रा परिमाण सिद्धान्त को रेखाचित्र के भाग A और भाग B की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है। रेखाचित्र का भाग A मुद्रा की मात्रा में परिवर्तनों का कीमत स्तर पर प्रभाव को स्पष्ट करता है —

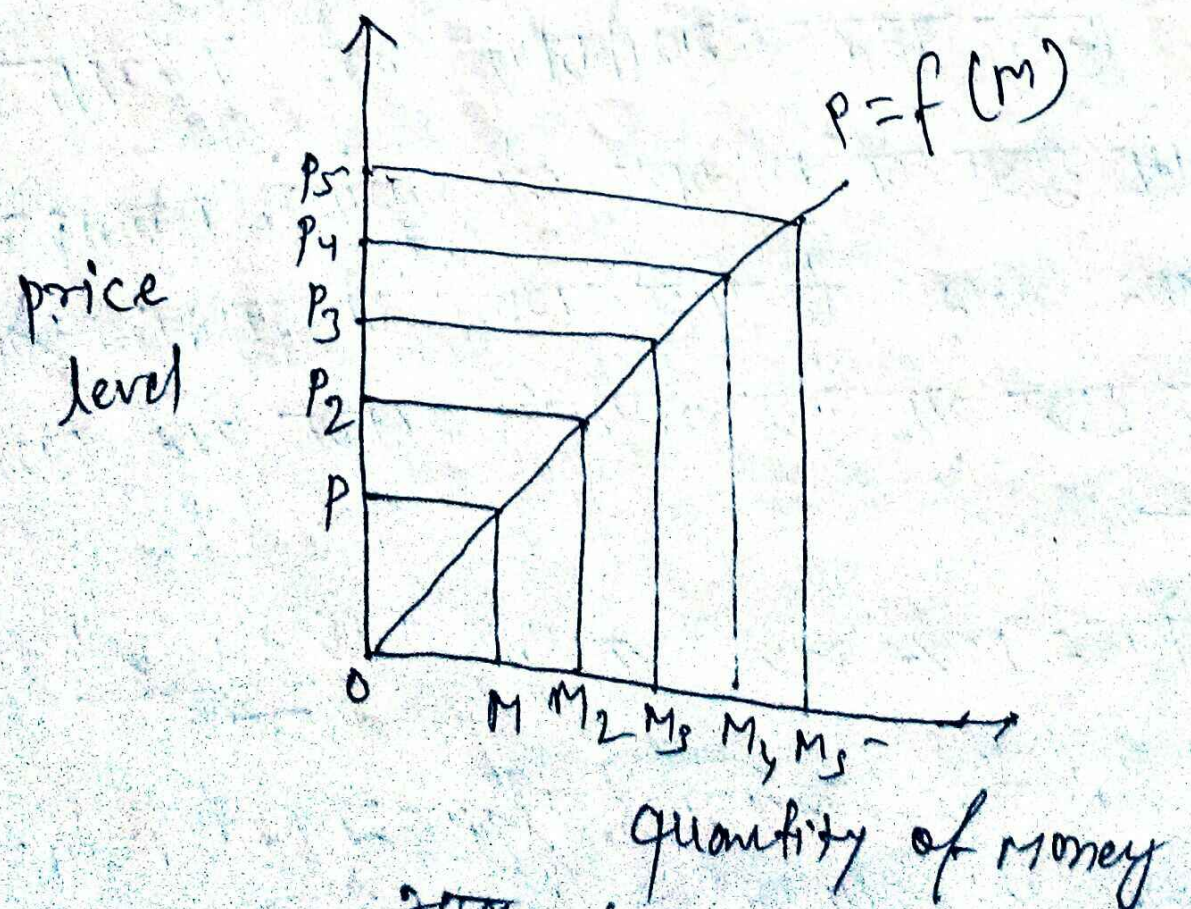

भाग - A

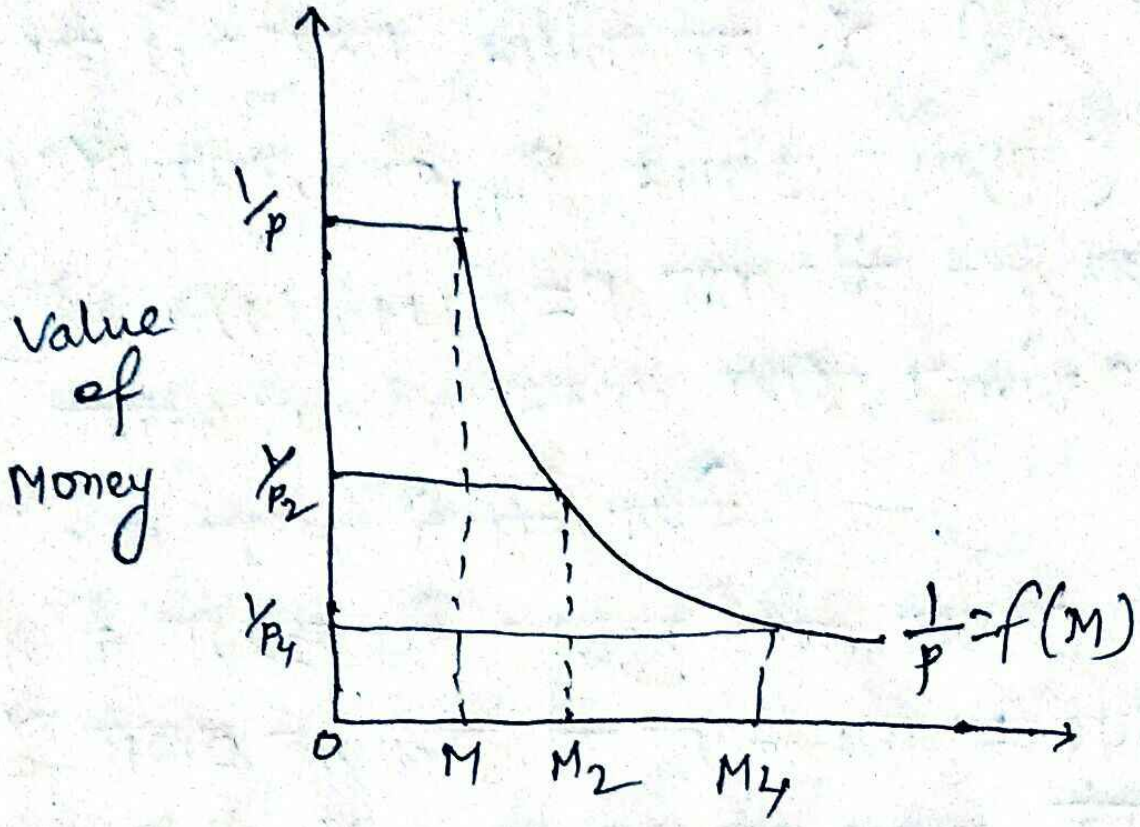

भाग - B

रेखाचित्र - मुद्रा की मात्रा और मुद्रा के मूल्य में सम्बन्ध।

आरंभ में, जब मुद्रा की मात्रा M है तो कीमत स्तर P है। जब मुद्रा की मात्रा बढ़कर दुगुनी अर्थात M_2 कर दी जाती है तो कीमत स्तर भी दुगुनी अर्थात P_2 हो जाता है। फिर जब ~~मुद्रा~~ मुद्रा की मात्रा बढ़ाकर चार गुणा अर्थात M_4 कर

दी जाती है तो कीमत स्तर भी बढ़कर चार गुना अर्थात P_4 हो जाता है। इस सम्बन्ध को वक्र $P=f(M)$ (मूल बिन्दु से 45° कोण) द्वारा व्यक्त किया जाता है।

रेखाचित्र के भाग B में मुद्रा की मात्रा तथा मुद्रा के मूल्य के बीच विपरीत सम्बन्ध को दर्शाया गया है। जब मुद्रा की मात्रा M है तो मुद्रा का मूल्य $\frac{1}{P}$ है। जब मुद्रा की मात्रा बढ़कर अर्थात P_2 कर दी जाती है तो मुद्रा का मूल्य पहले से आधा अर्थात $\frac{1}{P_2}$ रह जाता है और जब मुद्रा की मात्रा बढ़कर चार गुना अर्थात M_4 हो जाती है तो मुद्रा का मूल्य घटकर चौथाई अर्थात $\frac{1}{P_4}$ हो जाता है। मुद्रा की मात्रा और मुद्रा का मूल्य के बीच के बीच इस सम्बन्ध को नीचे की ओर

दर्शाया वक्र $\frac{1}{p}=f(M)$ द्वारा दिखाया गया है।

☐ सिद्धान्त की मान्यताएँ (Assumptions of the Theory)

फिशर का सिद्धान्त निम्नलिखित सर्व-मान्यताओं पर आधारित है —

1. V और T को स्वतंत्र माना गया है। अर्थात वे मुद्रा के परिणाम (M) या मूल्य स्तर (P) में होने वाले परिवर्तनों से प्रभावित नहीं होते।

2. P एक निष्क्रिय तत्व है जो अन्य साधनों से प्रभावित होता है।

3. V और T दीर्घकाल तक स्थिर रहते हैं।

4. यह सिद्धान्त इस धारणा पर आधारित है कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार विद्यमान है।